9

विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर कहानी सुनने के प्रभाव का अध्ययन

*प्रशान्त अग्निहोत्री**
*अनुभा मिश्रा***

कहानियाँ बच्चों में जिज्ञासा जगाती हैं, कल्पनाशील बनाती हैं, रागात्मक वृत्तियाँ उपजाती हैं और भरपूर मनोरंजन करने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों का पोषण करती हैं। आज की दिन-प्रतिदिन यांत्रिक बनती ज़िंदगी में क्या बच्चों का शेष सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध ज़रूरी नहीं है? यह प्रश्न हमारे मन को निरन्तर मथता है। वस्तुत: कहानी कहना और सुनना बच्चों के मानसिक विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना जाता है। कहानी सुनना बच्चों की दिनचर्या की अत्यंत महत्वपूर्ण गतिविधि है, जो बच्चों को पढ़ाई के बोझ से राहत तो दिलाती ही है साथ ही उनको कई अवधारणाओं को सरल तरीके से समझा भी देती है। आजकल के दौर में जहाँ टी.वी. व कार्टून बच्चों को अकेला कर देते हैं, वहीं कहानियाँ बच्चों को आपस में तथा बड़ों के करीब लाकर आत्मीयता, शब्द भंडार में वृद्धि तथा सामाजिकता बढ़ाती हैं। कहानियाँ बच्चों को आनंदित करती हैं। कहानी सुनने के दौरान बच्चों में अनेक कौशलों का विकास भी होता है। कहानियाँ परस्पर जुड़ी हुई घटनाओं की एक ऐसी शृंखला हैं जिन्हें शब्दों या चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

कहानियाँ प्राचीन काल से ही प्रत्येक सभ्यता एवं संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। कहानियों का प्रयोग मनोरंजन, शिक्षा, संस्कृति संरक्षण, नैतिक मूल्यों के विकास आदि कार्यों में किया जाता है। मनुष्य के जन्म के साथ ही कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। इसी कारण प्रत्येक सभ्य तथा आदिम समाज में कहानियाँ पाई जाती हैं। भारत में कहानियों का प्रयोग अति प्राचीन है। बचपन में हम अपनी दादा-दादी, नाना-नानी से परियों की, राजा-रानी की, महापुरुषों आदि की अनेक प्रकार की कहानियाँ सुनते हैं। जाने-अनजाने इनका प्रभाव हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता ही है।

* 312, समजिदगंज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
** *सहायक आचार्य,* सन इंस्टीट्यूट ऑफ़ टीचर एजुकेशन, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश

पहले जहाँ दादा-दादी, नाना-नानी बच्चों को बहलाने के लिए कहानी सुनाते थे। वहीं माँ बच्चों को सुलाने के लिए कोई कहानी गढ़ती थीं। इन कहानियों को गढ़ने के पीछे हर किसी का अपना मकसद होता था। कहानियों को सुनकर हम बड़े हुए हैं। यह कहने में अतिशयोक्ति नहीं है कि जो भी व्यावहारिक मूल्य हमारे अंदर स्थापित हुए हैं कहीं न कहीं उनमें मौखिक कहानियों का बहुत असर है लेकिन वर्तमान समय में ऐसा नहीं हो पा रहा है। एकल परिवार को अधिक प्राथमिकता देने की वजह से आज संयुक्त परिवार की व्यवस्था लगभग खत्म हो चुकी है। अब दादी-नानी की कहानियाँ सुनकर बच्चे बड़े नहीं हो रहे और माँ के पास भी अपने बच्चे को कहानियाँ सुनाने का वक्त नहीं है।

शायद ही कोई देश होगा, जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ आनंद की प्राप्ति के लिए कहानियाँ न कही जाती हों, न पढ़ी जाती हों। हर शाम खाना खा लेने के बाद बालकों के झुंड कहानी सुनाने के लिए घर के बड़े-बूढ़ों को घेर लेते हैं। यह परंपरा धरती पर लगभग सभी समाजों में देखने को मिलती है। देश-परदेश में घूमने वाले मुसाफ़िरों किसी रात किसी धर्मशाला में रुकते हैं तो अन्य देशों के मुसाफ़िर के साथ बैठकर नई-नई कहानियाँ कहते-सुनते हैं और दिनभर की थकान उतारते हैं। युद्ध के ज़ख्मों को वीरता से झेल लेने वाले सिपाही दवा की शीशियों से भी अधिक महत्त्व कहानियाँ सुनाने वाली नर्स को देते हैं। जेल में सड़ते कैदियों को भी अगर मौका मिल जाता है तो वे कहानियाँ कहने का प्रसंग ज़रूर ढूँढ़ लेते हैं। लंबी समुद्री यात्राओं में कहानियाँ ही रात के समय एकमात्र विनोद का साधन बनती हैं। कहानी की यही तो खासियत है कि इसमें सभी आनंद लेते हैं।

काका कालेलकर ने थोड़े से शब्दों में कहानी की महिमा का सुंदरता से यों वर्णन किया है- ''उत्तरी ध्रुव से लेकर दक्षिणी ध्रुव तक के सभी देशों में, विशाल जनपदों अथवा नन्हें टापुओं में, विकसित लोगों अथवा जंगली निवासियों में, बूढ़ों और बच्चों में, गृहस्थियों अथवा संन्यासियों में यदि कोई सर्वसामान्य व्यसन देखा जा सकता है तो वह है कहानी का व्यसन। संसार में शायद ही कोई गाँव होगा जहाँ कहानियाँ ना चलती हों। जहाँ-जहाँ व्यापार के पुराने अड्डे थे वहाँ-वहाँ दूर देशान्तरों के व्यापारी सरायों में इकट्ठे होते थे और फिर चातुरी, ठगबाज़ी, कुत्ते-बिल्ली, राजा-रानी, साधु-संतों, दैवीक्षोभ अथवा चमत्कारों, तंत्र-मंत्र या जादू-टोनों की कहानियाँ ही चलती थीं।

बाल-साहित्य में अत्यधिक उपयोगी साहित्य सृजन करने वाले गिजुभाई बधेका ने अपनी पुस्तक '*प्राथमिक शाला में शिक्षण पद्धतियाँ*' में शिक्षण की कथा पद्धति के बारे में लिखा है। गिजुभाई बधेका मानते थे कि "बालकों को हर एक विषय कथा या कहानी पद्धति से पढ़ाया जा सकता है। कहानी कहने में कुशल शिक्षक बालकों के सामने इतिहास की जानकारी ऐसे प्रभावशाली ढंग से रखते हैं कि बालक-बालिकाओं को इतिहास का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है। बच्चे इतिहास के पात्रों के साथ एकाकार हो जाते हैं या पास खड़े-खड़े पात्रों का इतिहास में दर्शन करते हैं। इस तरह कहानी के ज़रिए पढ़ा गया इतिहास कभी भी भुलाए भूलता नहीं।" इतिहास या भूगोल को केवल जानकारी के विषयों की तरह

0- + 2015.indd 56 5/26/2017 9:15:00 AM

पढ़ाने के बजाय गिजुभाई उन विषयों को कहानी में बदलने पर ज़ोर देते थे।

अध्ययन की आवश्यकता

इस दृष्टि से कहानी सिर्फ़ मनोरंजन भर नहीं है, वह संस्कार है, संस्कृति है, सभ्यता है और उससे भी बढ़कर बालक के सृजन का माध्यम है। वस्तुत: बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं। कोई भी देश तब तक समृद्ध नहीं हो सकता, जब तक वहाँ के बच्चे पूर्ण रूप से विकसित नहीं होंगे। बच्चे वह नींव होते हैं जिसके आधार पर एक सभ्य, सुसंस्कृत, सुचरित्र राष्ट्र का निर्माण होता है। इतिहास साक्षी है कि जिन बच्चों को आरंभ में ही उचित प्रोत्साहन और संरक्षण प्राप्त हुआ उन्होंने आगे चलकर काल के कपाल पर अपने अमिट हस्ताक्षर किए हैं। परंतु यदि बच्चों को प्रारंभ में उचित निर्देशन ना दिया जाए तो उनका और उनके साथ-साथ संपूर्ण राष्ट्र का भविष्य प्रभावित हो सकता है।

बच्चों के प्रारंभिक विकास में कहानियाँ बहुत सहायक सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि बच्चे स्वभाव से ही कहानियों में रुचि रखते हैं। कहानियाँ बच्चों को बहुत खुशी देती हैं, उनकी कल्पना शक्ति का प्रसार करती हैं एवं उनकी रचनात्मक शक्ति का विकास करती हैं। भारतीय संस्कृति में हमेशा माना जाता रहा है कि जो संस्कार बच्चे में बचपन से डाले जाते हैं वे पूरे जीवन भर उसके व्यक्तित्व तथा व्यवहार का हिस्सा रहते हैं। वीर अभिमन्यु की कथा इसका जीवंत उदाहरण है।

प्राचीन काल में संयुक्त परिवारों में रहते हुए बच्चे अपने दादा-दादी, नाना-नानी आदि से अनेक प्रकार की कहानियाँ सुनते थे और उन बच्चों में अपने परिवार के सदस्यों के साथ भावात्मक जुड़ाव भी अत्यधिक पाया जाता था, परंतु आज संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में माता-पिता के पास इतना समय नहीं है कि वे बैठकर अपने बच्चों को प्रेरक कहानियाँ सुनाएँ। आज के समय में कहानियों का स्थान टी.वी. पर दिखाए जाने वाले कार्टून शोज़ ने ले लिया है जिनका बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। परंतु फिर भी कुछ परिवार ऐसे हैं जहाँ बच्चों को कहानियाँ सुनाई जाती हैं। ये कहानियाँ नवीन तथ्यों से जहाँ एक ओर बच्चों को अवगत कराती हैं वहीं दूसरी ओर नए शब्द, कल्पनाओं, प्रश्नों को भी बच्चे के मन में जगाती हैं।

अपने परिवेश और उससे जुड़े अपरिचित घटकों से कहानी बच्चों का परिचय कराती हैं। उसमें विविध प्रश्न क्या, क्यों, कैसे की जिज्ञासा उत्पन्न करती हैं। यही जिज्ञासा सीखने का प्रारंभ है। बच्चे की जिज्ञासा यदि सुरक्षित रह सके और उसमें निरंतरता बनी रहे तो सीखने-सिखाने का काम काफ़ी सहज हो जायेगा। क्या कहानियाँ अपनी इस भूमिका का निर्वहन कर पा रही हैं? यही जानने के उद्देश्य से प्रस्तुत शोध संपादित किया गया है।

इससे पूर्व अनिल गोड़बोले (1988), मजूमदार (1990), स्टैनकोकी (1998), श्रीकांत गुज्जर (2002), इस्बैल, सोबोल, लिंडौर तथा लारेंस (2004), हेवन तथा डकी (2007), अग्निहोत्री (2008), कुमार (2008), सारा तथा लिज़ा (2008), पाण्डेय (2010), अब्दुल्ला (2012), माह्या यारिगारवेश (2013), दुबे (2013) आदि ने

0- + 2015.indd 57 5/26/2017 9:15:00 AM

कहानियों के संबंध में कई अध्ययन किए। किसी भी अनुसंधानकर्ता ने कहानी सुनने की जिज्ञासा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन नहीं किया। प्रस्तुत अध्ययन में इसी तथ्य का अनुशीलन किया गया है।

समस्या कथन

"विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर कहानी सुनने के प्रभाव का अध्ययन"

प्रमुख शब्दों का परिभाषीकरण

विद्यार्थी

विद्यार्थियों से आशय 11 से 14 वर्ष तक (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक अध्ययनरत्) के उन बच्चों से है जो संस्थागत रूप में विभिन्न विद्यालयों में अध्ययन करते हैं।

जिज्ञासा प्रवृत्ति

जिज्ञासा प्रवृत्ति से आशय मनुष्य की उस आदत से है जो किसी घटना या तथ्य को थोड़ा जानने के पश्चात् आगे और जानने के लिए तत्पर रहती है।

कहानी

प्रस्तुत अध्ययन में कहानी से तात्पर्य ऐसे बाल-साहित्य से है जिसे बच्चा अपनी पाठ्यपुस्तकों अथवा अपने परिवार जन के माध्यम से सुनता है। कहानी परस्पर जुड़ी हुई घटनाओं की एक शृंखला होती है जो बच्चे में उत्सुकता बनाए रखती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बच्चों की जिज्ञासा का अध्ययन करना।
2. बच्चों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
3. कहानी सुनने वाले बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले बच्चों की जिज्ञासा का अध्ययन करना।
4. कहानी सुनने वाले बालकों तथा कहानी ना सुनने वाले बालकों की जिज्ञासा का अध्ययन करना।
5. कहानी सुनने वाली बालिकाओं तथा कहानी ना सुनने वाली बालिकाओं की जिज्ञासा का अध्ययन करना।
6. कहानी सुनने वाले शहरी क्षेत्र के बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले शहरी क्षेत्र के बच्चों की जिज्ञासा का अध्ययन करना।
7. कहानी सुनने वाले ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की जिज्ञासा का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. कहानी सुनने वाले बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले बच्चों की जिज्ञासा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. कहानी सुनने वाले बालकों तथा कहानी ना सुनने वाले बालकों की जिज्ञासा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. कहानी सुनने वाली बालिकाओं तथा कहानी ना सुनने वाली बालिकाओं की जिज्ञासा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. कहानी सुनने वाले शहरी क्षेत्र के बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले शहरी क्षेत्र के बच्चों की जिज्ञासा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. कहानी सुनने वाले ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों तथा कहानी ना सुनने वाले ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की जिज्ञासा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

0- + 2015.indd 58 5/26/2017 9:15:00 AM

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

प्रस्तुत अनुसंधान वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि पर आधारित अनुसंधान है, जिसके अंतर्गत शाहजहाँपुर जनपद के विद्यालयों में अध्ययनरत 11 वर्ष से 14 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को चुना गया है। सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाओं को समंक के रूप में स्वीकार करते हुए उनके मध्य विद्यमान संबंध और अंतर को दृष्टिगत रखा गया है। प्राप्त आँकड़ों के सारणीय तथा सांख्यकीय विश्लेषण हेतु बालक तथा बालिका एवं ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों में बाँटा गया है।

सर्वेक्षण से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर समंक निर्मित किए गए हैं। विविध आयामों के अनुरूप समंकों का प्रयोग करके इस तथ्य का निर्वचन किया गया कि कहानियों का विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

समष्टि (जनसंख्या)

प्रस्तुत अध्ययन में 11 से 14 वर्ष तक के संस्थागत रूप से शाहजहाँपुर नगर क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों को इस जनसंख्या में रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अनुसंधान का उद्देश्य बच्चों द्वारा सुनी जाने वाली कहानियों का उनकी जिज्ञासा पर क्या प्रभाव होता है, का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादर्श का चयन संयोगजन्य प्रतिचयन विधि के आधार पर किया गया है। जिसके अंतर्गत जनपद शाहजहाँपुर के नगर क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों में से हिंदी माध्यम के 10 विद्यालयों का चयन कर उनमें अध्ययनरत 150 विद्यार्थी चयनित किए गए हैं। अन्य चरों की प्रभावशीलता को कम करने की दृष्टि से जाति, जेंडर, निवासीय पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव को समाप्त करते हुए न्यादर्श को संयोगजन्य रूप से चयनित किया गया है।

इस प्रकार कुल 60 बालक और 90 बालिकाएँ चयनित किए गए हैं जिनमें से 72 शहरी और 78 ग्रामीण पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी हैं।

प्रयुक्त उपकरण

अध्ययन में शोधकर्ताओं द्वारा विद्यार्थियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर यह ज्ञात किया गया है कि वे कहानी सुनते हैं अथवा नहीं। इसके लिए अनुसंधित्सुओं द्वारा कहानी सुनने की प्रवृत्ति संबंधी जाँच सूची का निर्माण कर प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों की जिज्ञासा का अध्ययन करने हेतु डॉ. राजीव कुमार द्वारा निर्मित तथा नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन, आगरा द्वारा प्रकाशित, "चिल्ड्रन्स क्यूरोसिटी स्केल" का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का संग्रहण

समंक संग्रहण के लिए अनुसंधानकर्ताओं ने व्यक्तिगत रूप से न्यादर्श में चयनित विद्यालयों में जाकर चयनित विद्यार्थियों से समंकों को संग्रहित किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन

परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों को वर्गीकृत करके प्रतिशत, माध्य, प्रमाप विचलन तथा प्रमाप विभ्रम की गणना कर टी-परीक्षण आदि सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग करके प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचन कर निष्कर्ष निकाले गए हैं।

1. बच्चों के जिज्ञासा स्तर का प्रसार तथा संख्या

अध्ययन के आधार पर पाया गया कि न्यादर्श में चयनित कुल 150 विद्यार्थियों में से 131 विद्यार्थियों के प्राप्तांक 66 (50 प्रतिशत) से अधिक हैं जिनमें से 91 विद्यार्थी कहानी सुनने वाले तथा 40 विद्यार्थी कहानी ना सुनने वाले हैं। इससे ज्ञात होता है कि अधिक संख्या में (87 प्रतिशत) विद्यार्थियों का जिज्ञासा स्तर अच्छा पाया गया जिनमें कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। अध्ययन के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों को ग्राफ़ 1 में प्रदर्शित किया गया है –

ग्राफ़ 1

विद्यार्थियों के जिज्ञासा स्तर का ग्राफ़ीय प्रदर्शन

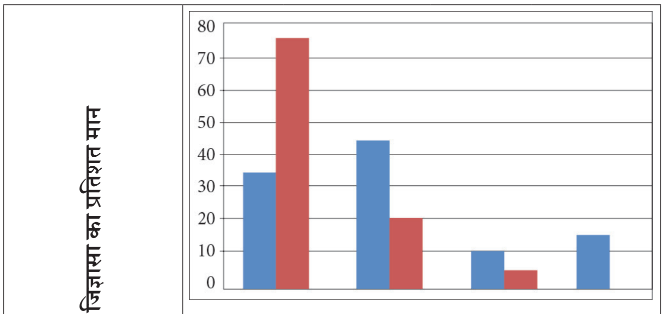

	सामान्य (66 से 78)	सामान्य से अधिक (79 से 87)	उच्च (88 से 96)	अत्यंत उच्च (97 से अधिक)
कहानी सुनने वाले	32 %	43 %	10 %	15 %
कहानी ना सुनने वाले	75 %	20 %	5 %	0 %

उपरोक्त ग्राफ़ का निरीक्षण करने से ज्ञात होता है कि कहानी सुनने वाले तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों में से कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों का जिज्ञासा स्तर अच्छा पाया गया। चिल्ड्रन्स क्यूरोसिटी स्केल पर 66 से 78 तक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में अर्थात् सामान्य जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले की अपेक्षा कहानी न सुनने वाले विद्यार्थी अधिक (75 प्रतिशत) पाए गए।

चिल्ड्रन्स क्यूरोसिटी स्केल पर 79 से 87 तक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में अर्थात् सामान्य से अधिक जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले 43 प्रतिशत तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थी 20 प्रतिशत पाए गए। अत: सामान्य से अधिक जिज्ञासा स्तर के अंतर्गत कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले विद्यार्थी अधिक संख्या में पाए गए।

चिल्ड्रन्स क्यूरोसिटी स्केल पर 88 से 96 तक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में अर्थात् उच्च जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले 10 प्रतिशत तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थी 5 प्रतिशत पाए गए। अत: उच्च जिज्ञासा स्तर के अंतर्गत भी कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले विद्यार्थी अधिक संख्या में पाए गए।

चिल्ड्रन्स क्यूरोसिटी स्केल पर प्रतिक्रिया के आधार पर अत्यंत उच्च जिज्ञासा वाले अर्थात् 97 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले विद्यार्थी 15 प्रतिशत पाए गए जबकि कहानी न सुनने वाले कोई भी विद्यार्थी नहीं पाए गए।

2. बच्चों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति का अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में कहानी सुनने की प्रवृत्ति का अध्ययन करने पर जो तथ्य सामने आए वे निम्नलिखित तालिका 1 में प्रदर्शित हैं –

तालिका 1

बच्चों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति

जेंडर	कहानी ना सुनने वाले	कहानी सुनने वाले					कौन सुनाता है?				
		राजा-रानी	*परी*	*भूत-प्रेत*	*महापुरुष*	*अन्य*	*दादा-दादी*	*चाचा-चाची*	*पापा-मम्मी*	*शिक्षक*	*अन्य*
बालक	19	2 (11%)	1 (05%)	18 (90%)	19 (53%)	17 (49%)	11 (34%)	9 (53%)	12 (43%)	2 (67%)	7 (41%)
बालिका	34	16 (89%)	18 (95%)	2 (10%)	17 (47%)	18 (51%)	21 (66%)	8 (47%)	16 (57%)	1 (33%)	10 (59%)
योग	53	18	19	20	36	35	32	17	28	3	17

उपरोक्त तालिका के आधार पर स्पष्ट है कि बच्चों की कहानी सुनने की प्रवृत्ति का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि कहानी सुनने वाले तथा कहानी न सुनने वाले विद्यार्थियों में से कहानी सुनने वालों की संख्या अधिक पाई गई। कुल 150 विद्यार्थियों में से कहानी सुनने वालों की संख्या 97 तथा कहानी ना सुनने वालों की संख्या 53 है। कहानी सुनने वालों में से विद्यार्थी जिस प्रकार की कहानियाँ प्राय: सुनते हैं उनमें राजा-रानी, भूत-प्रेत तथा महापुरुष प्रमुख हैं। परंतु इसके अतिरिक्त भी कई प्रकार की कहानियाँ बच्चे सुनते हैं, जैसे– चूहा-बिल्ली, हाथी, पेड़-पौधे आदि इस प्रकार के विद्यार्थियों को अन्य के अंतर्गत रखा गया है।

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ अधिक कहानी सुनती हैं। बालक तथा बालिकाओं में से राजा-रानी, परी तथा अन्य कहानियाँ बालिकाएँ तथा भूत-प्रेत एवं महापुरुषों की कहानियाँ बालक अधिक सुनते हैं। यहाँ पर कुछ ऐसे भी बच्चे हैं जो एक से अधिक प्रकार की कहानियाँ भी सुनते हैं इसी कारण से कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या का योग तालिका के अनुसार 128 हो रहा है। इस स्थिति को ठीक प्रकार से समझने हेतु वेन डायग्राम का प्रयोग किया गया है।

वेन डायग्राम

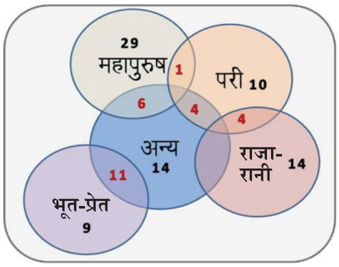

वेन डायग्राम का अवलोकन करने से विद्यार्थियों की संख्या की स्थिति पूर्णत: स्पष्ट हो जाती है। कुल विद्यार्थियों में से केवल महापुरुषों की कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 29, केवल परी की

0- + 2015.indd 61 5/26/2017 9:15:01 AM

कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 10, केवल राजा-रानी की कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 14, केवल भूत-प्रेतों की कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 9 तथा केवल अन्य कहानियाँ सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 14 है। अत: सर्वाधिक 29 विद्यार्थी महापुरुषों की कहानी सुनते हैं। कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या 97 है जो कि लाल रंग के अंकों को जोड़ने पर प्राप्त होती है।

11 विद्यार्थी भूत-प्रेत तथा अन्य की कहानियाँ, 6 विद्यार्थी महापुरुषों की तथा अन्य कहानियाँ, 4 विद्यार्थी अन्य तथा परी की कहानियाँ, 4 विद्यार्थी राजा-रानी तथा अन्य की कहानियाँ तथा केवल 1 विद्यार्थी महापुरुष तथा अन्य की कहानियाँ सुनते हैं।

इसके अतिरिक्त विद्यार्थी किस-किस से कहानी सुनते हैं इस बात का अध्ययन करने पर दादा-दादी, चाचा-चाची, माता-पिता, शिक्षक तथा अन्य के नाम सामने आए। अन्य में बुआ-फूफ़ा, नाना-नानी, भाई, बहन आदि को सम्मिलित किया गया है। तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक 32 विद्यार्थी दादा-दादी से कहानी सुनते हैं तथा दूसरे नंबर पर माता-पिता (28 विद्यार्थी) आते हैं।

3. जिज्ञासा पर कहानी सुनने के प्रभाव का विश्लेषण एवं विवेचन

बच्चों के जिज्ञासा स्तर पर कहानी सुनने के प्रभाव को जाँचने की दृष्टि से परिकल्पना निर्मित कर टी-परीक्षण के आधार पर जाँची गई है। इससे प्राप्त परिगणनाएँ तालिका 2 में प्रस्तुत की गई हैं।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रांतिक अनुपात का मान 5.64 प्राप्त हुआ है, जो कि स्वतंत्रांश 148

तालिका 2

कहानी सुनने वाले तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों के जिज्ञासा संबंधी प्राप्तांकों की परिगणनाएँ

परिकलित मूल्य	**जिज्ञासा प्राप्तांक**	
	कहानी सुनने वाले बच्चे	***कहानी ना सुनने वाले बच्चे***
माध्य	82.30	71.54
मानक विचलन	13.36	9.78
विद्यार्थियों की संख्या	97	53
प्रमाप विभ्रम	1.91	
माध्य अंतर	10.76	
क्रांतिक अनुपात	5.63	
स्वतंत्रांश	148	
5% सार्थकता स्तर पर तालिका मान	1.98	

0- + 2015.indd 62 5/26/2017 9:15:01 AM

तथा 5 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर निर्धारित तालिका मान 1.98 से अधिक है।

अत: शून्य परिकल्पना अस्वीकार होती है तथा यह कहा जा सकता है कि कहानी सुनने वाले तथा कहानी ना सुनने वाले बच्चों की जिज्ञासा में सार्थक अंतर है। यहाँ कहानी सुनने वाले बच्चों के प्राप्तांकों के मध्यमान कहानी ना सुनने वाले बच्चों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक पाए गए हैं, अत: कहा जा सकता है कि कहानी ना सुनने वाले बच्चों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले बच्चों में जिज्ञासा अधिक पाई गई।

4. विविध चरों के आधार पर जिज्ञासा पर कहानी सुनने का प्रभाव

विशेषीकृत निष्कर्ष प्राप्त करने की दृष्टि से विद्यार्थियों को जेंडर और क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत कर स्थापित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण कर निष्कर्ष प्राप्त किए गए हैं। जिनसे परिगणित मूल्य तालिका 3 में प्रदर्शित हैं। तालिका 3 में प्रदर्शित मूल्यों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि कहानी सुनने वाले बालकों तथा कहानी ना सुनने वाले बालकों की जिज्ञासा में सार्थक अंतर है। कहानी ना सुनने वाले बालकों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले बालकों में जिज्ञासा सार्थक रूप से अधिक है।

कहानी सुनने वाली बालिकाओं के जिज्ञासा प्राप्तांकों का मध्यमान कहानी ना सुनने वाली बालिकाओं के प्राप्तांकों के मध्यमान से सार्थक रूप से अधिक है। अत: कहा जा सकता है कि

तालिका 3

विविध चरों के आधार पर जिज्ञासा पर कहानी सुनने के प्रभाव संबंधी प्राप्तांक और परिगणनाएँ

परिगणित मूल्य	परिकल्पना संख्या एवं तुलनात्मक चर							
	बालक		*बालिका*		*शहरी*		*ग्रामीण*	
	2		*3*		*4*		*5*	
	कहानी सुनने वाले	*कहानी ना सुनने वाले*	*कहानी सुनने वाली*	*कहानी ना सुनने वाली*	*कहानी सुनने वाले*	*कहानी ना सुनने वाले*	*कहानी सुनने वाले*	*कहानी ना सुनने वाले*
संख्या	41	19	56	34	47	25	50	28
माध्य	82.09	72.34	82.46	71.09	86.99	73.10	77.90	70.14
प्रमाप विचलन	11.60	9.21	14.51	10.06	15.57	9.91	8.85	9.44
प्रमाप विभ्रम	2.83		2.59		3.04		2.21	
माध्य अंतर	9.75		11.37		13.89		7.76	
क्रांतिक अनुपात	3.45		4.39		4.57		3.51	
स्वतंत्रांश	58		88		70		76	
सारणी मूल्य *	2.00		1.99		2.00		1.99	
अंतर	सार्थक		सार्थक		सार्थक		सार्थक	
परिकल्पना स्थिति	अस्वीकृत		अस्वीकृत		अस्वीकृत		अस्वीकृत	

*5% सार्थकता स्तर पर

कहानी सुनने का जिज्ञासा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ग्रामीण क्षेत्र के कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों और कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों के जिज्ञासा प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अंतर है। कहानी सुनने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की जिज्ञासा का स्तर कहानी ना सुनने वाले इसी क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक है।

निष्कर्ष

आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों को तीन भागों में बाँटा गया है –

(अ) विद्यार्थियों के जिज्ञासा स्तर संबंधी निष्कर्ष,

(ब) विद्यार्थियों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति संबंधी निष्कर्ष, और

(स) कहानी सुनने की जिज्ञासा के प्रभाव संबंधी निष्कर्ष।

(अ) विद्यार्थियों के जिज्ञासा स्तर संबंधी निष्कर्ष

विद्यार्थियों के जिज्ञासा स्तर का अध्ययन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. 87 प्रतिशत विद्यार्थियों का जिज्ञासा स्तर अच्छा पाया गया जिनमें कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है।
2. सामान्य जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले की अपेक्षा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थी अधिक (75 प्रतिशत) पाए गए।
3. सामान्य से अधिक जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले 43 प्रतिशत तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थी 20 प्रतिशत पाए गए। अत: सामान्य से अधिक जिज्ञासा स्तर के अंतर्गत कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले विद्यार्थी अधिक संख्या में पाए गए।
4. उच्च जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले 10 प्रतिशत तथा कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थी 5 प्रतिशत पाए गए। अत: उच्च जिज्ञासा स्तर के अंतर्गत भी कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कहानी सुनने वाले विद्यार्थी अधिक संख्या में थे।
5. अत्यंत उच्च जिज्ञासा वाले विद्यार्थियों में कहानी सुनने वाले विद्यार्थी 15 प्रतिशत पाए गए जबकि कहानी ना सुनने वाला कोई भी विद्यार्थी नहीं पाया गया।

(ब) विद्यार्थियों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति संबंधी निष्कर्ष

विद्यार्थियों में कहानी सुनने की प्रवृत्ति का अध्ययन करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 53 तथा कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की संख्या 97 जो कि क्रमश: 35% तथा 65% पाई गई अर्थात् अधिक संख्या में विद्यार्थी कहानी सुनते हैं।
2. बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ अधिक कहानी सुनती हैं।
3. बालिकाएँ राजा-रानी, परी तथा अन्य कहानियाँ अधिक सुनती हैं।
4. बालक भूत-प्रेत एवं महापुरुषों की कहानियाँ अधिक सुनते हैं।
5. सर्वाधिक 29 (लगभग 19 प्रतिशत) विद्यार्थी महापुरुषों की कहानी सुनते हैं।

0- + 2015.indd 64 5/26/2017 9:15:01 AM

6. सर्वाधिक 32 अर्थात् 21 प्रतिशत विद्यार्थी दादा-दादी से कहानी सुनते हैं तथा दूसरे नंबर पर माता-पिता (28 विद्यार्थी अर्थात लगभग 19 प्रतिशत विद्यार्थी) आते हैं।

(स) कहानी सुनने की जिज्ञासा के प्रभाव संबंधी निष्कर्ष

विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर कहानी सुनने के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु 5 परिकल्पनाएँ स्थापित की गई हैं जिनके परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत हैं –

1. कहानी सुनने का विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वास्तव में कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों की तुलना में कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों में जिज्ञासा का स्तर अधिक पाया गया।
2. बालकों की जिज्ञासा पर कहानी सुनने का अच्छा प्रभाव पड़ता है।
3. कहानियाँ बालिकाओं की भी जिज्ञासा में वृद्धि करती हैं क्योंकि कहानी सुनने वाली बालिकाओं की जिज्ञासा का स्तर कहानी ना सुनने वाली बालिकाओं के जिज्ञासा स्तर से सार्थक रूप से अधिक है।
4. शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की जिज्ञासा पर भी कहानी का सार्थक सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
5. ग्रामीण क्षेत्र के कहानी सुनने वाले विद्यार्थियों की जिज्ञासा का स्तर कहानी ना सुनने वाले विद्यार्थियों से अधिक पाया गया अर्थात कहानी सुनने का ग्रामीण विद्यार्थियों के जिज्ञासा स्तर पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सुझाव

अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं –

1. विद्यार्थियों के प्रतिदिन के शिक्षण में कहानी को आवश्यक तत्व बनाया जाना चाहिए।
2. माता-पिता को अपने बच्चों को निरंतर कहानियाँ सुनानी चाहिए जिससे न केवल माता-पिता के साथ उनका भावात्मक संबंध विकसित होगा वरन् ज्ञान और जिज्ञासा जैसे मनोवैज्ञानिक चरों में भी सुधार आएगा।
3. शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही स्वयंसेवी संस्थाओं को स्टोरी टेलिंग के संदर्भ में और अधिक गंभीरता के साथ काम करना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को कहानी कहने और लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
5. विद्यालयों में प्रतिदिन एक घंटा कहानी का रखे जाने का प्रावधान किया जा सकता है।
6. कहानी सुनाते समय अध्यापकों और अभिभावकों को कहानी के प्रभावों और उसकी सार्थकता पर पूर्व विचार कर लेना चाहिए।
7. कहानी सुनाने का उद्देश्य मात्र मनोरंजनात्मक ना होकर नवीन ज्ञान और सीखने की ललक पैदा करना भी होना चाहिए।

0- + 2015.indd 65 5/26/2017 9:15:01 AM

संदर्भ

अग्निहोत्री, रमाकांत. 2008. 'कहानी सुनाने के बाद'. *प्राथमिक शिक्षक*. अक्तूबर 2008, वर्ष 33, अंक 4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

इसबेल, सोबोल, लिंडोअर और लॉरेंस. 2004. 'द इम्पेकट ऑफ़ स्टोरी टेलिंग एंड रीडिंग स्टोरीज़ ऑन द डेवलपमेंट ऑफ़ लेंग्वेज एंड कंप्रीहेंशन ऑफ़ यंग चिल्ड्रन.' *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन जर्नल*. वॉल्यूम 32. अंक 3.

कुमार, कृष्ण. 2008. 'कहानी कहाँ खो गयी'. *प्राथमिक शिक्षक*. अक्तूबर 2008, वर्ष 33, अंक 4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

गुज्जर, श्रीकांत. 2002. 'स्टोरी टेलिंग — एवे टू डेवलप द पर्सनेलटी ऑफ़ द चाइल्ड.' द *प्राइमरी टीचर*. वॉल्यूम 27, अंक 1.

पाण्डे, लता. 2010. 'पढ़ दो एक कहानी'. *प्राथमिक शिक्षक*. जनवरी 2010, वर्ष 34, अंक 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

बधेका, गिजुभाई. 2006. *कथा कहानी का शास्त्र*. अंकित पब्लिकेशन, जयपुर.

वेबसाइट

http://www.cibtech.org/j-life-sciences/publications/2013/vol-3no-3/jls-69-094-%20mahya-the-%20children.pdf

http://www.iaseuniversity.org.in/download/research/smt.%20sarita%20 sharma.pdf

http://www/iasj.net/iasj?func=fultext&ald=39919

http://www.indian-storytellingnetwork.org

http//jpip.org/pdf/research/edu-psy/abstracts.pdf

http://www.ssmrae.com/admin/images/ceb099590f31eea39848e0f 8730153d.pdf

http://www.storynet.org

http://wmpeople.wm.edu/asset/index/mxtsch/storytelling

http://worldroom.tamu.edu/workshops/commofRespect07/ storytelling/storytelling%20the%20heart%20and%20soul%20of%20education.pdf